

وَالْبُؤْمِنْتَ ۶ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۷

और मुसलमान औरतों की और **अल्लाह** बख़ाने वाला मेहरबान है

﴿ ५२ आयत ﴾ ﴿ ३३ سُورَةُ سَبَا مَكِّيَّةٌ ۵۸ ﴾ ﴿ ६ رُكُوعَاتِهَا ۶ ﴾

सूरए सबा मक्किय्या है, इस में चव्वन आयतें और छ^६ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहम वाला^१

الْحَدُّ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَدُّ فِي

सब खूबियां **अल्लाह** को कि उसी का माल है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में^२ और आख़िरत में उसी की

الْآخِرَةِ ۶ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۷ يَعْلَمُ مَا يَلِدُ فِي الْأَرْضِ وَمَا

ता'रीफ़ है^३ और वोही हिकमत वाला ख़बरदार जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है^४ और जो

يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْزُرُ فِيهَا ۷ وَهُوَ الرَّحِيمُ

ज़मीन से निकलता है^५ और जो आस्मान से उतरता है^६ और जो उस में चढ़ता है^७ और वोही है मेहरबान

الْغُفُورُ ۸ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ ۹ قُلْ بَلَىٰ وَرَأَيْتُمُ

बख़िाश वाला और काफ़िर बोले हम पर क़ियामत न आएगी^८ तुम फ़रमाओ क्यूं नहीं मेरे रब की क़सम

لَتَأْتِيَنَّكُمْ ۹ عِلْمِ الْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ

बेशक ज़रूर तुम पर आएगी ग़ैब जानने वाला^९ उस से गाइब नहीं ज़रा भर कोई चीज़ आस्मानों में

शिकं जाहिर हो और **अल्लाह** तआला उन्हें अज़ाब फ़रमाए और मोमिनीन जो अमानत के अदा करने वाले हैं उन के इमाम का इज़हार हो और

अल्लाह तबारक व तआला उन की तौबा कबूल फ़रमाए और उन पर रहमत व मफ़िरत करे अगर्चे उन से बा'ज ताआत में कुछ तक़सीर भी

हुई हो । 1 : सूरए सबा मक्की है सिवाए आयत "وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ" इस में छ^६ रूकूअ, चव्वन आयतें और आठ सो तेंतीस

कलिमे, एक हज़ार पांच सो बारह हर्फ़ हैं । 2 : या'नी हर चीज़ का मालिक ख़ालिक और हाकिम **अल्लाह** तआला है और हर ने'मत उसी

की तरफ़ से है तो वोही हम्दो सना का मुस्तहिक और सज़ावार है 3 : या'नी जैसा दुन्या में हम्द का मुस्तहिक **अल्लाह** तआला है वैसा ही

आख़िरत में भी हम्द का मुस्तहिक वोही है क्यूं कि दोनों ज़हान उसी की ने'मतों से भरे हुए हैं, दुन्या में तो बन्दों पर उस की हम्दो सना वाजिब

है क्यूं कि येह दारुत्तक्लीफ़ है और आख़िरत में अहले जन्त ने'मतों के सुरूर और राहतों की खुशी में उस की हम्द करेंगे । 4 : या'नी ज़मीन

के अन्दर दाख़िल होता है जैसे कि बारिश का पानी और मुर्दे और दफ़ने 5 : जैसे कि सब्ज़ा और दरख़्त और चश्मे और कानें और ब वक्ते

हशर मुर्दे 6 : जैसे कि बारिश, बर्फ़, ओले, और तरह तरह की बरकतें और फ़िरिशते 7 : जैसे कि फ़िरिशते और दुआएं और बन्दों के अमल

8 : या'नी उन्होंने ने क़ियामत के आने का इन्कार किया । 9 : या'नी मेरा रब ग़ैब का जानने वाला है उस से कोई चीज़ मख़फ़ी नहीं तो क़ियामत

का आना और उस के काइम होने का वक़्त भी उस के इल्म में है ।

وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ

और न ज़मीन में और न उस से छोटी न बड़ी मगर एक साफ़ बताने वाली

مُبِينٌ ۳ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ

किताब में है¹⁰ ताकि सिला दे उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये यह हैं जिन के लिये

مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۴ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ

बख़्शाश है और इज़्जत की रोज़ी¹¹ और जिन्होंने हमारी आयतों में हराने की कोशिश की¹² उन

لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٌ ۵ وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِينَ

के लिये सख़्त अज़ाबे दर्दनाक में से अज़ाब है और जिन्हें इल्म मिला¹³ वोह जानते हैं कि जो

أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ ۖ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ

कुछ तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास से उतरा¹⁴ वोही हक़ है और इज़्जत वाले सब ख़ूबियों सराहे की

الْحَبِيدِ ۶ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُبَشِّرُكُمْ إِذَا

राह बताता है और काफ़िर बोले¹⁵ क्या हम तुम्हें ऐसा मर्द बता दें¹⁶ जो तुम्हें ख़बर दे कि जब

مُرِّقْتُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ ۗ إِنَّكُمْ لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۗ أَفْتَرَىٰ عَلَىٰ اللَّهِ

तुम पुर्जे हो कर बिल्कुल रेज़ा रेज़ा हो जाओ तो फिर तुम्हें नया बनना है क्या **ALLAH** पर उस ने झूट

كُذِّبًا أَمْ بِهِ حِجَةٌ ۖ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ

बांधा या उसे सौदा (जून) है¹⁷ बल्कि वोह जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते¹⁸ अज़ाब

وَالصَّلٰلِ الْبَعِيدِ ۗ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّن

और दूर की गुमराही में हैं तो क्या उन्होंने ने न देखा जो उन के आगे और पीछे है

السَّاءِ وَالْأَرْضِ ۖ إِنَّ شَأْنِ خُسْفٍ بِهِمُ الْأَرْضِ ۖ أَوْ نُسْقِطُ عَلَيْهِمُ

आस्मान और ज़मीन¹⁹ हम चाहें तो उन्हें²⁰ ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान

10 : या'नी लौहे महफूज़ में 11 : जन्नत में । 12 : और उन में ता'न कर के और उन को शे'रो सेहर वगैरा बता कर लोगों को उन से रोकना चाहा (इस का मज़ीद बयान इसी सूत्र के आख़िर रकूअ पांच में आएगा ।) 13 : या'नी अस्हाबे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ या मोमिनीने अहले किताब मिस्तल अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के साथियों के 14 : या'नी कुरआने मज़ीद 15 : या'नी काफ़िरों ने आपस में मुतअज्जिब हो कर कहा : 16 : या'नी सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ । 17 : जो वोह ऐसी अज़ीबो ग़रीब बातें कहते हैं । **ALLAH** तआला ने कुफ़फ़ार के इस मक़ूले का रद फ़रमाया कि येह दोनों बातें नहीं, हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ इन दोनों से मुवरां हैं । 18 : या'नी

كَسَفًا مِنَ السَّيِّئِ ۱۰ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ۹ وَلَقَدْ

का टुकड़ा गिरा दें बेशक इस²¹ में निशानी है हर रुजूअ लाने वाले बन्दे के लिये²² और बेशक

اتَّبِنَادًا وَدَمِنًا فَضْلًا ۱۱ يُجِبَالُ أَوْ بِي مَعَهُ وَالطَّيْرِ ۱۲ وَالنَّالَهُ الْحَدِيدَ ۱۰

हम ने दावूद को अपना बड़ा फ़रस दिया²³ ऐ पहाड़ो उस के साथ **अल्लाह** की तरफ़ रुजूअ करो और ऐ परन्दो²⁴ और हम ने उस के लिये लोहा नर्म किया²⁵

أَنْ أَعْمَلَ سَبِغْتِ وَقَدَّرَ فِي السَّرِّ دَوَاعِمًا وَاصَالِحًا ۱۳ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ

कि वसीअ ज़िन्हें बना और बनाने में अन्दाजे का लिहाज़ रख²⁶ और तुम सब नेकी करो बेशक मैं तुम्हारे काम

بَصِيرٌ ۱۱ ۱۱ وَلِسَلِيمَانَ الرِّيحَ عُدُوهاشَهُمْ وَرَأواحُهاشَهُمْ ۱۲ وَأَسَلْنَا

देख रहा हूँ और सुलैमान के बस में हवा कर दी उस की सुब् की मन्ज़िल एक महीने की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह²⁷ और हम ने उस

لَهُ عَيْنَ القَطْرِ ۱۳ وَمِنَ الْجِنَّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِأذنِ رَبِّهِ ۱۴

के लिये पिघले हुए तांबे का चश्मा बहाया²⁸ और जिनों में से वोह जो उस के आगे काम करते उस के रब के हुक्म से²⁹ और

काफ़िर बअूस व हिसाब का इन्कार करने वाले । 19 : या'नी क्या वोह अन्धे हैं कि उन्होंने ने आस्मान व ज़मीन की तरफ़ नज़र ही नहीं डाली और अपने आगे पीछे देखा ही नहीं जो उन्हें मा'लूम होता कि वोह हर तरफ़ से इहाते में हैं और ज़मीन व आस्मान के अक्तार से बाहर नहीं जा सकते और मुल्के खुदा से नहीं निकल सकते और उन्हें भागने की कोई जगह नहीं, उन्होंने ने आयात और रसूल की तकज़ीब व इन्कार के दहशत अंगेज़ जुर्म का इरतिकाब करते हुए ख़ौफ़ न खाया और अपनी इसी हालत का ख़याल कर के न डरे । 20 : उन की तकज़ीब व इन्कार की सज़ा में कारून की तरह 21 : नज़र व फ़िक्र 22 : जो दलालत करती है कि **अल्लाह** तआला बअूस पर और इस के मुन्किर के अज़ाब पर और हर शै पर कादिर है । 23 : या'नी नुबुव्वत और किताब और कहा गया है मुल्क और एक क़ौल यह है कि हुस्ने सौत वगैरा तमाम चीजें जो आप को खुसूसियत के साथ अता फ़रमाई गईं और **अल्लाह** तआला ने पहाड़ों और परन्दों को हुक्म दिया : 24 : जब वोह तस्वीह करें उन के साथ तस्वीह करो । चुनान्चे, जब हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** तस्वीह करते तो पहाड़ों से भी तस्वीह सुनी जाती और परिन्द झुक आते, येह आप का मो'जिज़ा था । 25 : कि आप के दस्ते मुबारक में आ कर मिस्ल मोम या गुंधे हुए आटे के नर्म हो जाता और आप उस से जो चाहते बिगैर आग के और बिगैर ठोंके पीटे बना लेते । इस का सबब येह बयान किया गया है कि जब आप बनी इसराईल के बादशाह हुए तो आप का तरीका येह था कि आप लोगों के हालात की जुस्तजू के लिये इस तरह निकलते कि लोग आप को न पहचानें और जब कोई मिलता और आप को न पहचानता तो उस से आप दरयाफ्त करते कि दावूद कैसा शख्स है ? सब लोग ता'रीफ़ करते । **अल्लाह** तआला ने एक फ़िरिश्ता ब सूरते इन्सान भेजा, हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** ने उस से भी हुस्बे आदत येही सुवाल किया तो फ़िरिश्ते ने कहा कि दावूद हैं तो बहुत ही अच्छे आदमी काश उन में एक ख़स्लत न होती । इस पर आप मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया कि बन्दए खुदा कौन सी ख़स्लत ? उस ने कहा कि वोह अपना और अपने अहलो इयाल का ख़र्च बैतुल माल से लेते हैं । येह सुन कर आप के ख़याल में आया कि अगर आप बैतुल माल से वज़ीफ़ा न लेते तो ज़ियादा बेहतर होता, इस लिये आप ने बारगाहे इलाही में दुआ की, कि इन के लिये कोई ऐसा सबब कर दे जिस से आप अपने अहलो इयाल का गुज़ारा करें और बैतुल माल से आप को बे नियाज़ी हो जाए । आप की येह दुआ मुस्तजाब हुई और **अल्लाह** तआला ने आप के लिये लोहे को नर्म किया और आप को सन्अते ज़िन्ह साज़ी का इल्म दिया । सब से पहले ज़िन्ह बनाने वाले आप ही हैं, आप रोज़ाना एक ज़िन्ह बनाते थे वोह चार हज़ार को बिकती थी, उस में से अपने और अपने अहलो इयाल पर भी ख़र्च फ़रमाते और फ़ुकरा व मसाकीन पर भी सदका करते । इस का बयान आयत में है **अल्लाह** तआला फ़रमाता है कि हम ने दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** के लिये लोहा नर्म कर के उन से फ़रमाया 26 : कि उस के हल्के यक्सां और मुतवस्सित हों, न बहुत तंग न फ़राख़ । 27 : चुनान्चे आप सुब्द को दिमश्क से रवाना होते तो दोपहर को कैलूला इस्तख़ में फ़रमाते जो मुल्के फ़ारस में है और दिमश्क से एक महीने की राह पर है और शाम को इस्तख़ से रवाना होते तो शब को काबुल में आराम फ़रमाते येह भी तेज़ सुवार के लिये एक महीने का रास्ता है । 28 : जो तीन रोज़ सर ज़मीने यमन में पानी की तरह जारी रहा । और एक क़ौल येह है कि हर महीने में तीन रोज़ जारी रहता था । और एक क़ौल येह है कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** के लिये तांबे को पिघला दिया जैसा कि हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** के लिये लोहे को नर्म किया था । 29 : हज़रते इब्ने अब्बास **عَنْهُمَا** ने फ़रमाया

مَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نَذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿۱۲﴾ يَعْمَلُونَ

जो उन में हमारे हुकम से फिर³⁰ हम उसे भड़कती आग का अज़ाब चखाएंगे उस के लिये बनाते

لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِيبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ

जो वोह चाहता ऊंचे ऊंचे महल³¹ और तस्वीरें³² और बड़े हौजों के बराबर लगन³³ और लंगर दार

سُرْسِيَّتٍ ۙ اِعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا ۗ وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّاكِرِينَ ﴿۱۳﴾

देगें³⁴ ऐ दावूद वालो शुक्र करो³⁵ और मेरे बन्दों में कम हैं शुक्र वाले

فَلَبَّاقِضِينَ أَغْلِيهِ الْبُوتَ مَا دَلَّهِمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةَ الْأَرْضِ

फिर जब हम ने उस पर मौत का हुकम भेजा³⁶ जिनों को उस की मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने

تَأْكُلُ مِنْسَاتِهِ ۗ فَلَبَّاحَرَّتْ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ

कि उस का असा खाती थी फिर जब सुलैमान ज़मीन पर आया जिनों की हकीकत खुल गई³⁷ अगर गैब जानते होते³⁸

مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْبُهَيْنِ ﴿۱۴﴾ لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكِنِهِمْ آيَةٌ

तो इस ख़वारी के अज़ाब में न होते³⁹ बेशक सबा⁴⁰ के लिये उन की आबादी में⁴¹ निशानी थी⁴²

कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** के लिये जिन्नात को मुतीअ किया। **30** : और हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** की फ़रमां बरदारी न करे **31** : और आलीशान इमारतें और मस्जिदें और उन्हीं में से बैतुल मक्दिस भी है **32** : दरिन्दों और परिन्दों वगैरा की तांबे और बिल्लोर और पथ्थर वगैरा से और उस शरीअत में तस्वीर बनाना हुराम न था। **33** : इतने बड़े कि एक लगन में हज़ार आदमी खाते। **34** : जो अपने पायों पर काइम थीं और बहुत बड़ी थीं हत्ता कि अपनी जगह से हटाई नहीं जा सकती थीं सीढ़ियां लगा कर उन पर चढ़ते थे येह यमन में थीं **अल्लाह** तआला फ़रमाता है कि हम ने फ़रमाया कि **35** : **अल्लाह** तआला का उन ने मतों पर जो उस ने तुम्हें अता फ़रमाई उस की इताअत बजा ला कर। **36** : हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बारगाहे इलाही में दुआ की थी कि उन की वफ़ात का हाल जिन्नात पर जाहिर न हो ताकि इन्सानों को मा'लूम हो जाए कि जिन्न गैब नहीं जानते। फिर आप मेहराब में दाखिल हुए और हस्बे आदत नमाज़ के लिये अपने असा पर तक्या लगा कर खड़े हो गए। जिन्नात हस्बे दस्तूर अपनी ख़िदमतों में मशगूल रहे और येह समझते रहे कि हज़रत जिन्दा हैं और हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** का अर्सए दराज़ तक इसी हालत पर रहना उन के लिये कुछ हैरत का बाइस नहीं हुवा क्यूं कि वोह बारहा देखते थे कि आप एक माह दो दो माह और इस से ज़ियादा अर्स तक इबादत में मशगूल रहते हैं और आप की नमाज़ बहुत दराज़ होती है हत्ता कि आप की वफ़ात के पूरे एक साल बा'द तक जिन्नात आप की वफ़ात पर मुत्तलअ न हुए और अपनी ख़िदमतों में मशगूल रहे यहां तक कि ब हुक्मे इलाही दीमक ने आप का असा खा लिया और आप का जिस्म मुबारक जो लाठी के सहारे से काइम था ज़मीन पर आया, उस वक़्त जिन्नात को आप की वफ़ात का इल्म हुवा। **37** : कि वोह गैब नहीं जानते **38** : तो हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** की वफ़ात से मुत्तलअ होते **39** : और एक साल तक इमारत के कामों में तक्लीफ़े शाक्का उठाते न रहते। मरवी है कि हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बैतुल मक्दिस की बिना (बुन्याद) उस मक़ाम पर रखी थी जहां हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** का ख़ैमा नस्ब किया गया था, उस इमारत के पूरा होने से क़ब्ल हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** की वफ़ात का वक़्त आ गया तो आप ने अपने फ़रज़न्द अरजुमन्द हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** को इस की तक्मील की वसियत फ़रमाई। चुनान्चे, आप ने शयातीन को इस की तक्मील का हुक्म दिया। जब आप की वफ़ात का वक़्त करीब पहुंचा तो आप ने दुआ की, कि आप की वफ़ात शयातीन पर जाहिर न हो ताकि वोह इमारत की तक्मील तक मसरूफ़े अमल रहें और उन्हें जो इल्मे गैब का दा'वा है वोह बातिल हो जाए। हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** की उम्र शरीफ़ तिरपन साल की हुई, तेरह साल की उम्र शरीफ़ में आप सररीर आराए सल्तनत हुए, चालीस साल हुक्मरानी फ़रमाई। **40** : सबा अरब का एक कबीला है जो अपने जद के नाम से मशहूर है और वोह जद सबा बिन यशुब बिन या'रुब बिन क़ह्तान है। **41** : जो हुदूदे यमन में वाकेअ थी **42** : **अल्लाह** तआला की वहदानियत व कुदरत पर दलालत करने

جَنَّتٍ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۝ كَلُوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ ۝ ط

दो बाग़ दहने और बाएं⁴³ अपने रब का रिज़्क खाओ⁴⁴ और उस का शुक्र अदा करो⁴⁵

بَلَدًا طَيِّبَةً وَرَبِّ غَفُورًا ۝ ۱۵ ۝ فَأَعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلًا

पाकीज़ा शहर⁴⁶ बख़्शने वाला रब⁴⁷ तो उन्होंने ने मुंह फेरा⁴⁸ तो हम ने उन पर ज़ोर का अहला (सैलाब)

الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ الْأَكْلِ خَطِطٍ وَأَثَلٍ وَشَيْءٍ

भेजा⁴⁹ और उन के बाग़ों के इवज़ दो बाग़ उन्हें बदल दिये जिन में बुकटा मेवा⁵⁰ और झाउ (झाड़ी) और कुछ

مِنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ ۝ ۱۶ ۝ ذَلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِمَا كَفَرُوا ۝ وَهَلْ نُجِزِي إِلَّا

थोड़ी सी बेरियां⁵¹ हम ने उन्हें यह बदला दिया उन की नाशुक्रा⁵² की सज़ा और हम किसे सज़ा देते हैं

الْكَافِرِينَ ۝ ۱۷ ۝ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمُ الْوَادِيَّ الْوَادِيَّ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قُرًى

उसी को जो नाशुक्रा है और हम ने किये थे उन में⁵³ और उन शहरों में जिन में हम ने बरकत रखी⁵⁴ सरे राह

ظَاهِرَةً وَقَدَرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۝ ۱۸ ۝ سِيرُوا فِيهَا لِيَالِي وَأَيَّامًا آمِنِينَ ۝ ۱۸ ۝

कितने शहर⁵⁵ और उन्हें मन्ज़िल के अन्दाज़े पर रखा⁵⁶ उन में चलो रातों और दिनों अमनो अमान से⁵⁷

वाली और वोह निशानी क्या थी उस का आगे बयान होता है। 43 : या'नी उन की वादी के दाहने और बाएं दूर तक चले गए और उन से कहा गया था 44 : बाग़ ऐसे कसीरुस्समर (बहुत फलदार) थे कि जब कोई शख्स सर पर टोकरा लिये गुज़रता तो बिगौर हाथ लगाए किस्म किस्म के मेवों से उस का टोकरा भर जाता। 45 : या'नी इस ने'मत पर उस की ताअत बजा लाओ। 46 : लतीफ़ आबो हवा, साफ़ सुथरी सर ज़मीन, न उस में मच्छर न मखड़ी न खटमल न सांप न बिच्छू, हवा की पाकीज़गी का येह आलम कि अगर कहीं और का कोई शख्स उस शहर में गुज़र जाए और उस के कपड़ों में जूएं हों तो सब मर जाएं। हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने फ़रमाया कि शहरे सबा सन्ना से तीन फ़रसंग के फ़ासिले पर था। 47 : या'नी अगर तुम रब की रोज़ी पर शुक्र करो और इताअत बजा लाओ तो वोह बख़्शिश फ़रमाने वाला है। 48 : उस की शुक्र गुज़ारी से और अम्बिया عليهم السلام की तक्वीब की। वहब का कौल है कि **الله** तआला ने उन की तरफ़ तेरह नबी भेजे जिन्हों ने उन को हक़ की दा'वतें दीं और **الله** तआला की ने'मतें याद दिलाई और उस के अज़ाब से डराया मगर वोह ईमान न लाए और उन्हों ने अम्बिया को झुटला दिया और कहा कि हम नहीं जानते कि हम पर खुदा की कोई भी ने'मत हो, तुम अपने रब से कह दो कि उस से हो सके तो वोह इन ने'मतों को रोक ले। 49 : अज़ीम सैलाब जिस से उन के बाग़ अम्वाल सब डूब गए और उन के मकानात रैत में दफ़न हो गए और इस तरह तबाह हुए कि उन की तबाही अरब के लिये मसल बन गई। 50 : निहायत बद मज़ा। 51 : जैसी वीरानों में जम आती हैं, इस तरह की झाड़ियों और वृहशत नाक जंगल को जो उन के खुशनुमा बाग़ों की जगह पैदा हो गया था ब त्रीके मुशाकलत बाग़ फ़रमाया। 52 : और उन के कुफ़्र 53 : या'नी शहरे सबा में 54 : कि वहां के रहने वालों को वसीअ ने'मतें और पानी और दरख़्त और चश्मे इनायत किये, मुग़द इन से शाम के शहर हैं। 55 : क़रीब क़रीब, सबा से शाम तक सफ़र करने वालों को इस राह में तोशा और पानी साथ ले जाने की ज़रूरत न होती। 56 : कि चलने वाला एक मक़ाम से सुब्द चले तो दोपहर को एक आबादी में पहुंच जाए जहां ज़रूरियात के तमाम सामान हों और जब दोपहर को चले तो शाम को एक शहर में पहुंच जाए, यमन से शाम तक का तमाम सफ़र उसी आसाइश के साथ तै हो सके और हम ने उन से कहा कि 57 : न रातों में कोई खटका न दिनों में कोई तकलीफ़, न दुश्मन का अन्देशा न भूक प्यास का ग़म। मालदारों में हसद पैदा हुवा कि हमारे और ग़रीबों के दरमियान कोई फ़र्क़ ही नहीं रहा, क़रीब क़रीब की मन्ज़िलें हैं, लोग ख़िरामां ख़िरामां हवा खोरी करते चले जाते हैं, थोड़ी देर के बा'द दूसरी आबादी आ जाती है, वहां आराम करते हैं न सफ़र में तकान (थकन) है न कोफ़्त, अगर मन्ज़िलें दूर होतीं, सफ़र की मुद्दत दराज़ होती, राह में पानी न मिलता, जंगलों और बयाबानों में गुज़र होता तो हम तोशा साथ लेते पानी के इन्तिज़ाम करते सुवारियां और ख़ुदाम साथ रखते, सफ़र का लुत्फ़ आता और अमीरो ग़रीब का फ़र्क़ ज़ाहिर होता, येह ख़याल कर के उन्हों ने कहा।

فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِنَا أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ

तो बोले ऐ हमारे रब हमें सफ़र में दूरी डाल⁵⁸ और उन्होंने ने खुद अपना ही नुक़सान किया तो हम ने उन्हें कहानियां कर दिया⁵⁹

وَمَرَّ قَتْلُهُمْ كُلِّ مُمَرِّقٍ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿١٩﴾ وَ

और उन्हें पूरी परेशानी से परागन्दा कर दिया⁶⁰ बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं हर बड़े सब्र वाले हर बड़े शुक्र वाले के लिये⁶¹ और

لَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٠﴾

बेशक इब्लिस ने उन्हें अपना गुमान सच कर दिखाया⁶² तो वोह उस के पीछे हो लिये मगर एक गुरौह कि मुसल्मान था⁶³

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مَسْنُ

और शैतान का उन पर⁶⁴ कुछ क़ाबू न था मगर इस लिये कि हम दिखा दें कि कौन आख़िरत पर ईमान लाता है और कौन

هُوَ مِنْهَا فِي شَكٍّ ۖ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٢١﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ

इस से शक में है और तुम्हारा रब हर चीज़ पर निगहबान है तुम फ़रमाओ⁶⁵ पुकारो उन्हें जिन्हें

رَعَبْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ ۚ لَا يُبَلِّغُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي

अल्लाह के सिवा⁶⁶ समझे बैठे हो⁶⁷ वोह ज़रा भर के मालिक नहीं आस्मानों में और न

الْأَرْضِ وَمَالُهُمْ فِيهَا مِّنْ شَرِكٍ ۚ وَمَالَهُ مِنْهُم مِّنْ ظَهِيرٍ ﴿٢٢﴾ وَلَا

ज़मीन में और न उन का इन दोनों में कुछ हिस्सा और न अल्लाह का उन में से कोई मददगार और

تَتَفَعَّلُ الشَّفَاعَةَ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَن أٰذِنَ لَهُ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ

उस के पास शफ़ाअत काम नहीं देती मगर जिस के लिये वोह इज़्ज फ़रमाए यहां तक कि जब इज़्ज दे कर उन के दिलों की घबराहट दूर फ़रमा दी जाती है

قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقُّ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَن

एक दूसरे से⁶⁸ कहते हैं तुम्हारे रब ने क्या ही बात फ़रमाई वोह कहते हैं जो फ़रमाया हक़ फ़रमाया⁶⁹ और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला तुम फ़रमाओ कौन

58 : या'नी हमारे और शाम के दरमियान जंगल और बयाबान कर दे कि बिगैर तोशा और सुवारी के सफ़र न हो सके। 59 : बा'द वालों के लिये कि उन के अहवाल से इज़त हासिल करें। 60 : क़बीला क़बीला मुन्तशिर हो गया, वोह बस्तियां गुफ़ हो गई और लोग बे ख़ान्मां (बे सरो सामान) हो कर जुदा जुदा बिलाद में पहुंचे, गुस्सान शाम में और अज़्द उम्मान में और खुजाआ तिहामा में और आले खुज़ैमा इराक़ में और औस व ख़ज़रज का ज़द अज़्र बिन आमिर मदीना में। 61 : और सब्रो शुक्र मोमिन की सिफ़त है कि जब वोह बला में मुब्तला होता है सब्र करता है और जब ने'मत पाता है शुक्र बजा लाता है। 62 : या'नी इब्लिस जो गुमान रखता था कि बनी आदम को वोह शहवत व हिंस और ग़ज़ब के ज़रीए गुमराह कर देगा, येह गुमान उस ने अहले सबा पर बल्कि तमाम काफ़िरों पर सच्चा कर दिखाया कि वोह उस के मुतबेअ हो गए और उस की इताअत करने लगे। हसन رضي الله تعالى عنه ने फ़रमाया कि शैतान ने न किसी पर तलवार खींची न किसी पर कोड़े मारे झूठे वा'दों और बातिल उम्मीदों से अहले बातिल को गुमराह कर दिया। 63 : उन्होंने ने उस का इत्तिबाअ न किया। 64 : जिन के हक़ में उस का गुमान पूरा हुवा 65 : ऐ मुहम्मद मुस्तफ़ा! صلى الله تعالى عليه وسلم मक्कए मुकर्रमा के काफ़िरों से 66 : अपना मा'बूद 67 : कि वोह तुम्हारी मुसीबतें दूर करें लेकिन ऐसा नहीं हो सकता क्यूं कि किसी नफ़अ व ज़रर में 68 : ब तरीके इस्तिब्यार।

يَزُرُّكُمْ مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ اللَّهُ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَّ

जो तुम्हें रोजी देता है आस्मानों और ज़मीन से⁷⁰ तुम खुद ही फ़रमाओ **اللَّهُ**⁷¹ और बेशक हम या तुम⁷² या तो ज़रूर

هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۚ قُلْ لَا تَسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نَسْأَلُ

हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में⁷³ तुम फ़रमाओ हम ने तुम्हारे गुमान में अगर कोई जुर्म किया तो उस की तुम से पूछ नहीं न तुम्हारे कौतकों

عَمَّا تَعْمَلُونَ ۚ قُلْ يَجْعَلُ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُم مِّمَّا يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۖ وَهُوَ

(करतूतों) का हम से सुवाल⁷⁴ तुम फ़रमाओ हमारा रब हम सब को जम्अ करेगा⁷⁵ फिर हम में सच्चा फैसला फ़रमा देगा⁷⁶ और वोही है

الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۚ قُلْ أَرَأُونِي الَّذِينَ أَلْحَقْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا ۖ بَلْ

बड़ा न्याय चुकाने वाला (दुरुस्त फैसला करने वाला) सब कुछ जानता तुम फ़रमाओ मुझे दिखाओ तो वोह शरीक जो तुम ने उस से मिलाए हैं⁷⁷ हिशत (हरगिज़ ऐसा नहीं) बल्कि

هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا

वोही है **اللَّهُ** इज्जत वाला हिक्मत वाला और ऐ महबूब हम ने तुम को न भेजा मगर ऐसी रिसालत से जो तमाम आदमियों को घेरने वाली है⁷⁸ खुश ख़बरी देता⁷⁹

وَنَذِيرًا ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۚ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ

और डर सुनाता⁸⁰ लेकिन बहुत लोग नहीं जानते⁸¹ और कहते हैं यह वा'दा कब आएगा⁸²

69 : या'नी शफ़अत करने वालों को ईमानदारों की शफ़अत का इज्ज दिया । 70 : या'नी आस्मान से मीह बरसा कर और ज़मीन से सब्ज़ा उगा कर । 71 : क्यूं कि इस सुवाल का बजुज़ इस के और कोई ज़वाब ही नहीं । 72 : या'नी दोनों फ़रीकों में से हर एक के लिये इन दोनों हालों में से एक हाल ज़रूरी है 73 : और येह जाहिर है कि जो शख्स सिर्फ़ **اللَّهُ** तआला को रोजी देने वाला, पानी बरसाने वाला, सब्ज़ा उगाने वाला जानते हुए भी बुतों को पूजे जो किसी एक ज़रा भर चीज़ के मालिक नहीं (जैसा कि ऊपर आयात में बयान हो चुका) वोह यकीनन खुली गुमराही में है । 74 : बल्कि हर शख्स से उस के अमल का सुवाल होगा और हर एक अपने अमल की जज़ा पाएगा । 75 : रोज़े कियामत 76 : तो अहले हक़ को जन्नत में और अहले बातिल को दोज़ख़ में दाखिल करेगा । 77 : या'नी जिन बुतों को तुम ने इबादत में शरीक किया है मुझे दिखाओ तो किस काबिल हैं, क्या वोह कुछ पैदा करते हैं, रोज़ी देते हैं ? और जब येह कुछ नहीं तो उन को खुदा का शरीक बनाना और उन की इबादत करना कैसी अज़मी ख़ता है, इस से बाज़ आओ । 78 : इस आयात से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की रिसालत आम्मा है, तमाम इन्सान इस के इहाते में हैं गोरे हों या काले, अरबी हों या अज़मी, पहले हों या पिछले, सब के लिये आप रसूल हैं और वोह सब आप के उम्मत । बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है : सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** फ़रमाते हैं : मुझे पांच चीज़ें ऐसी अता फ़रमाई गई जो मुझ से पहले किसी नबी को न दी गई : (1) एक माह की मसाफ़त के रो'ब से मेरी मदद की गई, (2) तमाम ज़मीन मेरे लिये मस्जिद और पाक की गई कि जहां मेरे उम्मत को नमाज़ का वक़्त हो नमाज़ पढ़े और (3) मेरे लिये ग़नीमतें हलाल की गई जो मुझ से पहले किसी के लिये हलाल न थीं और (4) मुझे मर्तबए शफ़अत अता किया गया और (5) अम्बिया ख़ास अपनी कौम की तरफ़ मबक़स होते थे और मैं तमाम इन्सानों की तरफ़ मबक़स फ़रमाया गया । हदीस में सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के फ़ज़ाइले मख़सूसा का बयान है जिन में से एक आप की रिसालते आम्मा है जो तमाम जिन्नो इन्स को शामिल है । **ख़ुलासा** येह कि हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** तमाम ख़ल्क के रसूल हैं और येह मर्तबा ख़ास आप का है जो कुरआने करीम की आयात और अहादीसे कसीरा से साबित है । सूरए फुरक़ान की इब्तिदा में भी इस का बयान गुज़र चुका है (غَارَات) 79 : ईमान वालों को **اللَّهُ** तआला के फ़ज़ल की 80 : काफ़िरो को उस के अद्ल का । 81 : और अपने जहल की वजह से आप की मुख़ालफ़त करते हैं 82 : या'नी कियामत का वा'दा ।

إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَخِرُونَ عَنْهُ

अगर तुम सच्चे हो तुम फ़रमाओ तुम्हारे लिये एक ऐसे दिन का वा'दा जिस से तुम न एक घड़ी पीछे

سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالنَّاسُ كُفُّوا مِنْ هَذَا

हट सको न आगे बढ़ सको⁸³ और काफ़िर बोले हम हरगिज़ न ईमान लाएंगे इस

الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۖ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ

कुरआन पर न उन किताबों पर जो इस से आगे थीं⁸⁴ और किसी तरह तू देखे जब ज़ालिम अपने रब के पास

عِنْدَ رَبِّهِمْ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلِ يَقُولُ الَّذِينَ

खड़े किये जाएंगे उन में एक दूसरे पर बात डालेगा वोह जो दबे थे⁸⁵

اسْتُضِعُّوا الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا وَلَا أَنْتُمْ لَكُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾ قَالَ

उन से कहेंगे जो ऊंचे खिंचते थे⁸⁶ अगर तुम न होते⁸⁷ तो हम ज़रूर ईमान ले आते वोह जो ऊंचे

الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا الَّذِينَ اسْتُضِعُّوا أَنْ حُنَّ صَدَدْنَاكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ

खिंचते थे उन से कहेंगे जो दबे हुए थे क्या हम ने तुम्हें रोक दिया हिदायत से

بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾ وَقَالَ الَّذِينَ اسْتُضِعُّوا

बा'द इस के कि तुम्हारे पास आई बल्कि तुम खुद मुजरिम थे और कहेंगे वोह जो दबे हुए थे

لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونَنَا أَنْ نَكْفُرَ

उन से जो ऊंचे खिंचते थे बल्कि रात दिन का दाउं (फ़रेब) था⁸⁸ जब कि तुम हमें हुक्म देते थे कि **اللّٰهُ** का

بِاللَّهِ وَنَجْعَلُ لَهُ آندَادًا ۖ وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ لَسَارًا أَوْ الْعَذَابَ ۖ وَ

इन्कार करें और उस के बराबर वाले ठहराएं और दिल ही दिल में पचताने लगे⁸⁹ जब अज़ाब देखा⁹⁰ और

جَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ هَلْ يُجْرُونَ إِلَّا مَا

हम ने तौक डाले उन की गरदनो में जो मुन्किर थे⁹¹ वोह क्या बदला पाएंगे मगर वोही

83 : या'नी अगर तुम मोहलत चाहो तो ताखीर मुम्किन नहीं और अगर जल्दी चाहो तो तक्दुम मुम्किन नहीं, बहर तक्दीर इस वा'दे का अपने वक़्त पर पूरा होना। 84 : तौरैत और इन्जील वगैरा। 85 : या'नी ताबेअ और पैरव थे 86 : या'नी अपने सरदारों से 87 : और हमें ईमान लाने से न रोकते 88 : या'नी तुम शबो रोज़ हमारे लिये मक्र करते थे और हमें हर वक़्त शिर्क पर उभारते थे 89 : दोनों फ़रीक़ ताबेअ भी और मत्वूअ भी, पैरव भी और उन के बहकाने वाले भी, ईमान न लाने पर 90 : जहन्म का। 91 : ख़्वाह बहकाने वाले हों या उन के कहने में

كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۳۲﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ

जो कुछ करते थे⁹² और हम ने जब कभी किसी शहर में कोई डर सुनाने वाला भेजा वहां के आसूदों

مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَفِرُونَ ﴿۳۳﴾ وَقَالُوا إِنَّا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا

(अमीरों) ने येही कहा कि तुम जो ले कर भेजे गए हम उस के मुन्किर हैं⁹³ और बोले हम माल और

وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِعَدَّ بَيْنَ ﴿۳۵﴾ قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن

औलाद में बढ़ कर हैं और हम पर अज़ाब होना नहीं⁹⁴ तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़क वसीअ करता है जिस के

يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۳۶﴾ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَ

लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है⁹⁵ लेकिन बहुत लोग नहीं जानते और तुम्हारे माल और

لَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَىٰ إِلَّا مَنَ أَمَنَ وَعَمِلَ

तुम्हारी औलाद इस काबिल नहीं कि तुम्हें हमारे कुर्ब तक पहुंचाएं मगर वोह जो ईमान लाए और नेकी

صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفِ

की⁹⁶ उन के लिये दूना दून (कई गुना) सिला⁹⁷ उन के अमल का बदला और वोह बालाखानों में

आने वाले, तमाम कुपफ़ार की येही सज़ा है। 92 : दुन्या में कुफ़र और मा'सियत। 93 : इस में सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की तस्कीने खातिर फ़रमाई गई कि आप इन कुपफ़ार की तक्ज़ीब व इन्कार से रन्जीदा न हों, कुपफ़ार का अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ येही दस्तूर रहा है और मालदार लोग इसी तरह अपने माल और औलाद के गुरूर में अम्बिया की तक्ज़ीब करते रहे हैं। शाने नुज़ूल : दो शख़्स शरीके तिजारत थे, उन में से एक मुल्के शाम को गया और एक मक्कए मुकर्रमा में रहा। जब नबिये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ मक्कस हुए और उस ने मुल्के शाम में हुजूर की ख़बर सुनी तो अपने शरीक को ख़त लिखा और उस से हुजूर का मुफ़स्सल हाल दरयाफ़्त किया। उस शरीक ने जवाब में लिखा कि मुहम्मद मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने अपनी नुबुव्वत का ए'लान तो किया है लेकिन सिवाए छोटे दरजे के हक़ीर व ग़रीब लोगों के और किसी ने उन का इत्तिबाअ नहीं किया। जब येह ख़त उस के पास पहुंचा तो वोह अपने तिजारती काम छोड़ कर मक्कए मुकर्रमा आया और आते ही अपने शरीक से कहा कि मुझे सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का पता बताओ और मा'लूम कर के हुजूर की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ किया आप दुन्या को क्या दा'वत देते हैं और हम से क्या चाहते हैं? फ़रमाया : बुत परस्ती छोड़ कर एक **اَللّٰهُ** तआला की इबादत करना, और आप ने अहक़ामे इस्लाम बताए। येह बातें उस के दिल में असर कर गई और वोह शख़्स पिछली किताबों का आलिम था, कहने लगा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप बेशक **اَللّٰهُ** तआला के रसूल हैं। हुजूर ने फ़रमाया : तुम ने येह कैसे जाना ? उस ने कहा कि जब कभी कोई नबी भेजा गया पहले छोटे दरजे के ग़रीब लोग ही उस के ताबेअ हुए, येह सुन्नते इलाहियह हमेशा ही जारी रही। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई 94 : या'नी जब दुन्या में हम खुशहाल हैं तो हमारे आ'माल व अफ़आल **اَللّٰهُ** तआला को पसन्द होंगे और ऐसा हुवा तो आख़िरत में अज़ाब नहीं होगा। **اَللّٰهُ** तआला ने उन के इस ख़याले बातिल का इत्बाल फ़रमा दिया कि सवाबे आख़िरत को मईशते दुन्या पर क़ियास करना ग़लत है। 95 : ब तरीके इब्बिला व इम्तिहान। तो दुन्या में रोज़ी की कशाइश रिज़ाए इलाही की दलील नहीं और ऐसे ही इस की तंगी **اَللّٰهُ** तआला की नाराज़ी की दलील नहीं। कभी गुनहगार पर वुस्अत करता है, कभी फ़रमां बरदार पर तंगी, येह उस की हिकमत है, सवाबे आख़िरत को इस पर क़ियास करना ग़लत व बे जा है। 96 : या'नी माल किसी के लिये सबबे कुर्ब नहीं सिवाए मोमिने सालेह के जो उस को राहे खुदा में ख़र्च करे और औलाद किसी के लिये सबबे कुर्ब नहीं सिवाए उस मोमिन के जो उन्हें नेक इल्म सिखाए दीन की ता'लीम दे और सालेह व मुत्तकी बनाए। 97 : एक नेकी के बदले दस से ले कर सात सो गुना तक और इस से भी ज़ियादा जितना खुदा चाहे।

اٰمِنُوْنَ ۝۳۷ وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْ اٰيٰتِنَا مُعْجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ

अमनो अमान से हैं⁹⁸ और वोह जो हमारी आयतों में हराने की कोशिश करते हैं⁹⁹ वोह अज़ाब में

مُحْضَرُونَ ۝۳۸ قُلْ اِنَّ رَّبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ

ला धरे जाएंगे¹⁰⁰ तुम फ़रमाओ बेशक मेरा रब रिज़्क वसीअ़ फ़रमाता है अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और

يَقْدِرُ لَهُ ۝۳۹ وَمَا اَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزٰقِيْنَ ۝۴۰

तंगी फ़रमाता है जिस के लिये चाहे¹⁰¹ और जो चीज़ तुम **ALLAH** की राह में खर्च करो वोह उस के बदले और देगा¹⁰² और वोह सब से बेहतर रिज़्क देने वाला¹⁰³

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَبِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِهْلُوْا اِيَّاكُمْ كَاٰنُوْا

और जिस दिन उन सब को उठाएगा¹⁰⁴ फिर फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा क्या येह तुम्हें

يَعْبُدُوْنَ ۝۴० قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَاٰتٰنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَاٰنُوْا

पूजते थे¹⁰⁵ वोह अर्ज़ करेंगे पाकी है तुझ को तू हमारा दोस्त है न वोह¹⁰⁶ बल्कि वोह

يَعْبُدُوْنَ الْجِنِّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهٖمْ مُّؤْمِنُوْنَ ۝۴१ فَاٰلِيَوْمَ لَا يَبْلِكُ

जिन्नों को पूजते थे¹⁰⁷ उन में अक्सर उन्हीं पर यकीन लाए थे¹⁰⁸ तो आज तुम में एक दूसरे

بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نُّفَعًا وَّلَا ضَرًا ۙ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُرُوْقًا

के भले बुरे का कुछ इख़्तियार न रखेगा¹⁰⁹ और हम फ़रमाएंगे ज़ालिमों से उस आग

عَذَابِ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكْذِبُوْنَ ۝۴२ وَاِذَا تَلٰٓى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا

का अज़ाब चखो जिसे झुटलाते थे¹¹⁰ और जब उन पर हमारी रोशन आयतें¹¹¹

98 : या'नी जन्त के मनाज़िले बाला में । 99 : या'नी कुरआने करीम पर ज़बाने ता'न खोलते हैं और येह गुमान करते हैं कि अपनी इन बातिल कारियों से वोह लोगों को ईमान लाने से रोक देंगे और उन का येह मक्र इस्लाम के हक़ में चल जाएगा और वोह हमारे अज़ाब से बच रहेंगे, क्यूं कि उन का ए'तिकाद येह है कि मरने के बा'द उठना ही नहीं है तो अज़ाब सवाब कैसा । 100 : और उन की मक्कारियां उन्हें कुछ काम न आएंगी । 101 : अपने हस्बे हिकमत । 102 : दुन्या में या आखिरत में । बुखारी व मुस्लिम की हदीस में है कि **ALLAH** तआला फरमाता है : खर्च करो तुम पर खर्च किया जाएगा । दूसरी हदीस में है : सद्के से माल कम नहीं होता, मुआफ़ करने से इज़्जत बढ़ती है, तवाजोअ़ से मर्तबे बुलन्द होते हैं । 103 : क्यूं कि उस के सिवा जो कोई किसी को देता है ख़्वाह बादशाह लश्कर को या आका गुलाम को या साहिबे ख़ाना अपने इयाल को वोह **ALLAH** तआला की पैदा की हुई और उस की अता फ़रमाई हुई रोज़ी में से देता है । रिज़्क और उस से मुन्तफ़ेअ़ होने के अस्बाब का ख़ालि़क़ सिवाए **ALLAH** तआला के कोई नहीं, वोही रज़्ज़ाके हक़ीकी है । 104 : या'नी उन मुशिरकीन को 105 : दुन्या में 106 : या'नी हमारी इन से कोई दोस्ती नहीं तो हम किस तरह इन के पूजने से राज़ी हो सकते थे, हम इस से बरी हैं । 107 : या'नी शयातीन को कि उन की इताअ़त के लिये ग़ैरे खुदा को पूजते थे । 108 : या'नी शयातीन पर । 109 : और वोह झूठे मा'बूद अपने पुजारियों को कुछ नफ़अ़ नुक्सान न पहुंचा सकेंगे । 110 : दुन्या में । 111 : या'नी आयाते कुरआन ज़बाने सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से ।

بَيِّنَتْ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ

पढ़ी जाएं तो कहते हैं¹¹² यह तो नहीं मगर एक मर्द कि तुम्हें रोकना चाहते हैं तुम्हारे बाप दादा

أَبَاؤُكُمْ وَقَالُوا مَا هَذَا إِلَّا إِفْكٌ مُّفْتَرَىٰ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا

के मा'बूदों से¹¹³ और कहते हैं¹¹⁴ यह तो नहीं मगर बोहतान जोड़ा हुवा और काफ़िरों ने हक़ को

لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۗ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾ وَمَا آتَيْنَهُمْ مِّنْ

कहा¹¹⁵ जब उन के पास आया यह तो नहीं मगर खुला जादू और हम ने उन्हें कुछ किताबें

كُتُبٍ يَّدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيرٍ ۖ وَكَذَّبَ

न दीं जिन्हें पढ़ते हों न तुम से पहले उन के पास कोई डर सुनाने वाला आया¹¹⁶ और इन से

الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَمَا بَلَغُوا مَعْشَارًا مَّا آتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۗ

अगलों ने¹¹⁷ झुटलाया और यह उस के दसवें को भी न पहुंचे जो हम ने उन्हें दिया था¹¹⁸ फिर उन्होंने ने मेरे रसूलों को झुटलाया

فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٣٥﴾ قُلْ إِنَّمَا أَعْظَمُ بِوَاحِدَةٍ ۚ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ

तो कैसा हुआ मेरा इन्कार करना¹¹⁹ तुम फ़रमाओ मैं तुम्हें एक ही नसीहत करता हूँ¹²⁰ कि **اللَّهُ** के लिये खड़े रहो¹²¹

مَثْنَىٰ وَفُرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا ۗ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۗ إِن هُوَ إِلَّا

दो दो¹²² और अकेले अकेले¹²³ फिर सोचो¹²⁴ कि तुम्हारे उन साहिब में जुनून की कोई बात नहीं वोह तो नहीं मगर तुम्हें

¹¹² : हज़रते सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की निस्वत ¹¹³ : या'नी बुतों से । ¹¹⁴ : कुरआन शरीफ़ की निस्वत ¹¹⁵ : या'नी कुरआन

शरीफ़ को ¹¹⁶ : या'नी आप से पहले मुशिकीने अरब के पास न कोई किताब आई न रसूल जिस की तरफ़ अपने दीन की निस्वत कर सकें

तो यह जिस खयाल पर हैं उन के पास उस की कोई सनद नहीं वोह उन के नफ़्स का फ़रेब है । ¹¹⁷ : या'नी पहली उम्मतों ने मिस्ल कुरेश

के रसूलों की तकज़ीब की और उन को ¹¹⁸ : या'नी जो कुव्वत व कस्रते माल व औलाद व तूले उम्र पहलों को दी गई थी मुशिकीने कुरेश

के पास तो उस का दसवां हिस्सा भी नहीं, इन के पहले तो उन से ताक़त व कुव्वत, मालो दौलत में दस गुना से ज़ियादा थे । ¹¹⁹ : या'नी

उन को ना पसन्द रखना और अज़ाब देना और हलाक फ़रमाना या'नी पहले मुकज़िबीन ने जब मेरे रसूलों को झुटलाया तो मैं ने अपने अज़ाब

से उन्हें हलाक किया और उन की ताक़त व कुव्वत और मालो दौलत कोई चीज़ भी काम न आई, इन लोगों की क्या हकीकत है इन्हें डरना

चाहिये । ¹²⁰ : अगर तुम ने इस पर अमल किया तो तुम पर हक़ वाजेह हो जाएगा और तुम वसाविस व शुबुहात और गुमराही की मुसीबत

से नजात पाओगे, वोह नसीहत यह है ¹²¹ : महज़ तलबे हक़ की निय्यत से, अपने आप को तरफ़ दारी और तअस्सुब से ख़ाली कर के

¹²² : ताकि बाहम मशवरा कर सको और हर एक दूसरे से अपनी फ़िक्र का नतीजा बयान कर सकें और दोनों इन्साफ़ के साथ ग़ौर कर सकें

¹²³ : ताकि मज्मअ और इज़्दहाम से तबीअत मुतवहिदश न हो और तअस्सुब और तरफ़ दारी व मुकाबला व लिहाज़ व ग़ैरा से तबीअतें पाक

रहें और अपने दिल में इन्साफ़ करने का मौक़अ मिले । ¹²⁴ : और सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की निस्वत ग़ौर करो कि क्या ज़ैसा

कि कुफ़्फ़ार आप की तरफ़ जुनून की निस्वत करते हैं इस में सच्चाई का कुछ शाएबा भी है ? तुम्हारे अपने तजरिबे में, कुरेश में या नौए इन्सान

में कोई शख्स भी इस मर्तबे का आकिल नज़र आया है ? क्या ऐसा ज़हीन ऐसा साइबुरीए देखा है ? ऐसा सच्चा ऐसा पाक नफ़्स कोई और

भी पाया है ? जब तुम्हारा नफ़्स हुक्म (फ़ैसला) कर दे और तुम्हारा ज़मीर मान ले कि हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** इन औसाफ़

में यक्ता हैं तो तुम यकीन जानो ।

نَذِيرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٣٦﴾ قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ

डर सुनाने वाले¹²⁵ एक सख्त अज़ाब के आगे¹²⁶ तुम फ़रमाओ मैं ने तुम से इस पर कुछ अज़्र मांगा हो

فَهُوَ لَكُمْ ۖ إِنَّ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾ قُلْ

तो वोह तुम्हीं को¹²⁷ मेरा अज़्र तो **اللَّهُ** ही पर है और वोह हर चीज़ पर गवाह है तुम फ़रमाओ

إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۖ عَلَٰمُ الْغُيُوبِ ﴿٣٨﴾ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا

बेशक मेरा रब हक़ का इल्का फ़रमाता है¹²⁸ बहुत जानने वाला सब ग़ैबों का तुम फ़रमाओ हक़ आया¹²⁹ और

يُبْدِي الْبَاطِلَ وَمَا يَعْبُدُ ﴿٣٩﴾ قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضَلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۚ

बातिल न पहल करे और न फिर (लौट) कर आए¹³⁰ तुम फ़रमाओ अगर मैं बहका तो अपने ही बुरे को बहका¹³¹

وَإِنْ اهْتَدَيْتُ فَبِإِذْنِ رَبِّي ۖ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ﴿٤٠﴾ وَلَوْ تَرَىٰ

और अगर मैं ने राह पाई तो उस के सबब जो मेरा रब मेरी तरफ़ वदह्य फ़रमाता है¹³² बेशक वोह सुनने वाला नज़्दीक है¹³³ और किसी तरह तू देखे¹³⁴

إِذْ فَرَعُوا فِلاَقُوتَ وَأَخَذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ وَقَالُوا الْمَنَابِتُ ۚ وَ

जब वोह घबराहट में डाले जाएंगे फिर बच कर न निकल सकेंगे¹³⁵ और एक क़रीब जगह से पकड़ लिये जाएंगे¹³⁶ और कहेंगे हम इस पर ईमान लाए¹³⁷ और

أَنَّا لَهُمُ التَّنَٰوُشُ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٤٢﴾ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۚ وَ

अब वोह इसे क्यूंकर पाएँ इतनी दूर जगह से¹³⁸ कि पहले¹³⁹ तो इस से कुफ़र कर चुके थे और

125 : **اللَّهُ** तआला के नबी **126** : और वोह अज़ाबे आखिरत है। **127** : या'नी मैं नसीहत व हिदायत और तब्तीग व रिसालत पर तुम से कोई अज़्र नहीं तलब करता **128** : अपने अम्बिया की तरफ़। **129** : या'नी कुरआन व इस्लाम **130** : या'नी शिर्क व कुफ़र मिट गया, न उस की इब्तिदा रही न उस का इअ़ादा, मुग़ाद येह है कि वोह हलाक हो गया। **131** : कुफ़रारे मक्का हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से कहते थे कि आप गुमराह हो गए। **اللَّهُ** तआला ने अपने नबी **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को हुक्म दिया कि आप उन से फ़रमा दें कि अगर येह फ़र्ज़ किया जाए कि मैं बहका तो इस का वबाल मेरे नफ़्स पर है। **132** : हिक्मत व बयान की, क्यूं कि राहयाब होना उसी की तौफ़ीक व हिदायत पर है। अम्बिया सब मा'सूम होते हैं गुनाह उन से नहीं हो सकता और हुज़ूर तो सय्यिदुल अम्बिया हैं **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** खल्क को नेकियों की राहें आप के इत्तिबाअ से मिलती हैं, बा वुजूद जलालते मन्ज़िलत और रिफ़अते मर्तबत के आप को हुक्म दिया गया कि ज़लालत की निस्बत अला सबीलिल फ़र्ज़ अपने नफ़्स की तरफ़ फ़रमाएँ ताकि खल्क को मा'लूम हो कि ज़लालत का मन्शा इन्सान का नफ़्स है, जब इस को उस पर छोड़ दिया जाता है इस से ज़लालत पैदा होती है और हिदायत हुज़रते हक़ **عَزَّ وَجَلَّ** की रहमत व मौहिबत से हासिल होती है, नफ़्स उस का मन्शा नहीं। **133** : हर राहयाब और गुमराह को जानता है और उन के अमल व किरदार से बा खबर है, कोई कितना ही छुपाए किसी का हाल उस से छुप नहीं सकता। अरब के एक मायानाज़ शाइर इस्लाम लाए तो कुफ़रार ने उन से कहा कि क्या तुम अपने दीन से फिर गए और इतने बड़े शाइर और ज़बान के माहिर हो कर मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर ईमान लाए ? उन्होंने ने कहा : हां वोह मुज़्र पर ग़ालिब आ गए, कुरआने करीम की तीन आयतें मैं ने सुनीं और चाहा कि उन के काफ़िये पर तीन शेर'र कहूं, हर चन्द कोशिश की, मेहनत उठाई, अपनी तमाम कुव्वत सर्फ़ कर दी मगर येह मुम्किन न हो सका, तब मुझे यकीन हो गया कि येह बशर का कलाम नहीं वोह आयतें "قُلْ إِنْ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ" से "سَمِيعٌ قَرِيبٌ" तक हैं। **134** : कुफ़रार को मरने या क़ब्र से उठने के वक़्त या बद्र के दिन **135** : और कोई जगह भागने और पनाह लेने की न पा सकेंगे **136** : जहां भी होंगे क्यूं कि कहीं भी हों **اللَّهُ** तआला की पकड़ से दूर नहीं हो सकते, उस वक़्त हक़ की मा'रिफ़त के लिये मुज़्तर होंगे। **137** : या'नी सय्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर। **138** : या'नी अब मुकल्लफ़ होने के महल से दूर हो कर तोबा व ईमान कैसे पा सकेंगे **139** : या'नी अज़ाब

يَقْدِفُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٥٢﴾ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا

वे देखे फेंक मारते हैं¹⁴⁰ दूर मकान से¹⁴¹ और रोक कर दी गई उन में और उस में

يَسْتَهْتُونَ كَمَا فَعَلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ﴿٥٣﴾

जिसे चाहते हैं¹⁴² जैसे उन के पहले गुगुहों से किया गया था¹⁴³ बेशक वोह धोका डालने वाले शक में थे¹⁴⁴

﴿٢٥﴾ اباتها ٢٥ ﴿٣٥﴾ سُورَةُ فَاطِرٍ مَكِّيَّةٌ ٢٣ ﴿٥٢﴾ رُكُوعَاتُهَا ٥ ﴿٥٣﴾

सूरए फ़ातिर मक्किय्या है, इस में पेंतालीस आयतें और पांच रूकूअ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला¹

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكَةِ رُسُلًا أُولَىٰ

सब खूबियां अल्लाह को जो आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़िरिशतों को रसूल करने वाला² जिन के

أَجْنَحَةٍ مَثْنِي وَثُلُثٌ وَرُبَاعٌ ۖ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ

दो दो तीन तीन चार चार पर हैं बढ़ाता है आफ़रीनिश (पैदाइश) में जो चाहे³ बेशक अल्लाह

كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۗ

हर चीज़ पर कादिर है अल्लाह जो रहमत लोगों के लिये खोले⁴ उस का कोई रोकने वाला नहीं

وَمَا يُمْسِكُ ۗ فَلَا مُمْسِكَ لَهُ مِنْ بَعْدِهَا ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا

और जो कुछ रोक ले तो उस की रोक के बा'द उस का कोई छोड़ने वाला नहीं और वोही इज़्जतों हिकमत वाला है ऐ

النَّاسِ إِذْ كُرُوا نَعَمْتَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ ۗ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرزُقُكُمْ

लोगों ! अपने ऊपर अल्लाह का एहसान याद करो⁵ क्या अल्लाह के सिवा और भी कोई ख़ालिक़ कि आस्मान और

देखने से पहले 140 : या'नी बे जाने कह गुज़रते हैं, जैसा कि उन्होंने ने रसूले करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की शान में कहा था कि वोह शाइर

हैं, साहिर हैं, काहिन हैं हालां कि उन्होंने ने कभी हुज़ूर से शे'रो सेहर व कहानत का सुदूर न देखा था। 141 : या'नी सिद्को वाकिइयत से दूर,

कि उन के उन मताइन (ता'नों) को सिद्क से कुर्ब व नज़्दीकी भी नहीं। 142 : या'नी तौबा व ईमान में। 143 : कि उन की तौबा व ईमान वक़ते

यास कबूल न फ़रमाई गई। 144 : ईमानिय्यात के मुतअल्लिक। 1 : सूरए फ़ातिर मक्किय्या है, इस में पांच रूकूअ, पेंतालीस आयतें, नव सो

सत्तर कलिमे, तीन हज़ार एक सो तीस हुरूफ़ हैं। 2 : अपने अम्बिया की तरफ़। 3 : फ़िरिशतों में और इन के सिवा और मख़्लूक में। 4 : मिस्ल

बारिश व रिज़क़ व सिद्हत वगैरा के। 5 : कि उस ने तुम्हारे लिये ज़मीन को फ़र्श बनाया, आस्मान को बिगैर किसी सुतून के काइम किया, अपनी

राह बताने और हक़ की दा'वत देने के लिये रसूलों को भेजा, रिज़क़ के दरवाज़े खोले।